42

एक ही उत्तर वाले तीन प्रश्न

(8:31-37)

हम रोमियों की पुस्तक के सबसे अर्थपूर्ण वचन अर्थात रोमियों 8:31-37 पर आ गए हैं, जिसे बहुत से लोग पुस्तक का चरम मानते हैं। जॉन आर. स्टॉट ने कहा है कि इस भाग में, ''प्रेरित इतनी ऊंचाई पर ले जाता है जितनी नये नियम में कहीं और नहीं है।''[1] डग्लस जे. मू ने रोमियों 8 के अन्तिम भाग को ''अपने लोगों के लिए परमेश्वर के सनातन समर्पण का भव्य जश्न'' कहा है।[2]

अध्याय 8 की अन्तिम आयतों में, पहले हमें क्षमा पाए हुओं के लिए परमेश्वर की सज़्भाल पर तीन अडोल विश्वास मिलते हैं (आयत 28): परमेश्वर अपने बच्चों की ओर से काम कर रहा है। वह सब वस्तुओं को मिलाकर उनकी भलाई पर काम कर रहा है और ऐसा वह उनके लिए कर रहा है, जो उससे प्रेम करते हैं। फिर हमें अपने उद्देश्य को कार्यान्वित करने के लिए परमेश्वर के तीन पज़्के निष्कर्ष मिलते हैं (आयतें 29, 30): कालांतर में, परमेश्वर को पहले से पता था और उसने पहले से ठहराया; वर्तमान में, वह बुला रहा है और धर्मी ठहरा रहा है; और भविष्य में वह महिमा देगा। अन्त में हमारे पाठ के वचन में हमें अपने लोगों के परमेश्वर के तरस पर तीन न भूलने वाले प्रश्न मिलते हैं: ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?'' (आयत 31ख); ''परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा?'' (आयत 33ख); और ''कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?'' (आयत 35क)। रोमियों 8:31-37 में और भी प्रश्न हैं, परन्तु बाकी इन तीनों से सज़्बन्धित हैं।

मैं पाठ का नाम ''एक उज़र वाले तीन प्रश्न'' रख रहा हूं। वह ''एक उज़र'' ज़्या है? वचन में आगे अध्ययन करते हुए यह बताया जाएगा।

हमारा विरोधी कौन हो सकता है? (8:31, 32)

हमारा वचनपाठ यह पूछते हुए आरज़्भ होता है, ''सो हम इन बातों के विषय में ज़्या कहें?'' (आयत 31क)। अन्य शज़्दों में ''जिन बातों की हम चर्चा कर रहे हैं, उनके बारे में हम ज़्या कहें?''[3] इसके त्वरित संदर्भ में, इसमें हमारी निर्बलता में आत्मा की सहायता (आयतें 26, 27), परमेश्वर का उनके लिए, जो उनसे प्रेम रखते हैं, सब बातों को मिलाकर भलाई करवाना है (आयत 28), और परमेश्वर का अपनी सनातन इच्छाओं तथा योजनाओं को कार्यान्वित करना है (आयतें 29, 30)। यह सब ध्यान में रखते हुए, ''हम ज़्या करें?'' (NEB)। हमें किस निष्कर्ष या निष्कर्षों पर पहुंचना चाहिए?

पौलुस ने एक ढंग के साथ उज़र दिया, जिसे उसने आमतौर पर रोमियों की पुस्तक में इस्तेमाल किया। सांकेतिक उज़रों वाले प्रश्न देते हुए हम उन्हें ''वाक्पटु प्रश्न'' कहते हैं। पौलुस ने उन्हें किसी मौखिक उज़र को निकालने के लिए नहीं कहा, बल्कि सच्चाइयों को प्रभावशाली

ढंग से और अपने पाठकों को शामिल करते हुए बताने के लिए कहा, जिससे वे विचार कर सकें।

हमारी ओर कौन है?

पौलुस ने अपने आरज़्भिक प्रश्न का उज़र एक और प्रश्न के साथ दिया, जो उनमें से पहला है, जिनकी वे बात करना चाहते हैं: "यदि परमेश्वर हमारी ओर है[4], तो हमारा विरोधी कौन है?" (आयत 31ख)। यदि हमारे पास प्रश्न का अन्तिम भाग "हमारा विरोधी कौन है?" ही होता तो हमारे पास कई उज़र हो सकते थे। पौलुस उन असंज़्य लोगों का नाम बता सकता था, जो उसके "विरुद्ध" थे, चाहे वे अविश्वासी परिवार के सदस्य, एक ईर्ष्यालु यहूदी, मूर्तिपूजक परेशानी देने वाले, कठोर रोमी अगुवे हों या शैतान। आप यीशु के लिए जीने के अपने प्रयासों का विरोध करने वालों की सूची बना सकते हैं।

परन्तु प्रश्न के पहले भाग को जोड़ने पर, पूछने का अंदाज़ बदल जाता है: *यदि परमेश्वर हमारी ओर है,* तो हमारा विरोधी कौन है। इस वाज़्य में, "यदि" का अर्थ "ज़्योंकि" है: "*ज़्योंकि* परमेश्वर हमारी ओर है। ..." "हमारी ओर" का अर्थ "हमारे पक्ष में" है (मेकोर्ड)। ज़्योंकि परमेश्वर हमारी ओर है, *सफलतापूर्वक* हमारा विरोध कौन कर सकता है? ज़्योंकि परमेश्वर हमारी ओर है, हमारा विरोध करके कौन बच सकता है? इसका सांकेतिक अर्थ है "**कोई नहीं!**" भजन लिखने वाले ने लिखा है, "यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा ज़्या कर सकता है?" (भजन संहिता 118:6)। अन्य दो मुज़्य प्रश्नों पर आने पर याद रखें कि उनका उज़र भी "**कोई नहीं!**" ही है।

परमेश्वर ने ज़्या किया?

पौलुस ने केवल यह नहीं कहा कि परमेश्वर "हमारी ओर" है, बल्कि उसने इस बात का प्रमाण भी दिया। आयत 32 परमेश्वर के इस विवरण से आरज़्भ होती है: "जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया[5]" (आयत 32क)। अनुवादित शज़्द "छोड़ा" (*pheidomai* से) के लिए यूनानी शज़्द का इस्तेमाल अब्राहम की अपने पुत्र का बलिदान करने की इच्छा दिखाने के बाद परमेश्वर द्वारा सराहना सप्तति[6] में किया गया: "... ज़्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन अपने इकलौते पुत्र को ज़ी, नहीं रज़ छोड़ा [*pheidomai*]; इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का ज़य मानता है" (उत्पज़ि 22:12)। जो काम अब्राहम करने को *तैयार* था, परमेश्वर ने वास्तव में वह *कर दिया।* परमेश्वर ने अपने एकमात्र इकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा।[7]

इसके बजाय उसने उसे मारे जाने के लिए "दे दिया।" परमेश्वर ने ऐसा ज़्यों किया? यह उसने "हमारे लिए" किया! ओज़्टेवियुस विन्सलो ने लिखा है, "यीशु को मरने के लिए किसने दिया? धन के लिए, यहूदा ने नहीं; भय के कारण, पिलातुस ने नहीं; द्वेष के कारण यहूदियों ने नहीं; बल्कि प्रेम के कारण, पिता ने!"[8] "परमेश्वर ने जगत [यानी हम] से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया" (यूहन्ना 3:16क)।

जी. सी. ब्रिवर ने एक बार यीशु को गतसमनी बाग में, पिता से विनती करते हुए दिखाया था, "हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए" (मज़ी 26:39)। फिर (मानवीकरण

के अपने इस्तेमाल के लिए सफाई देने के बाद[9]) भाई ब्रिवर ने निज़्न दृश्य की कल्पना की:

> गतसमनी से बिलखने की वह पुकार स्वर्ग में ऊपर गई और स्वर्गदूत गाना बन्द करके सावधान खड़े हो गए। मैं उन्हें पिता की ओर देखते और उससे आज्ञा पाने की उज़्मीद करते देखता हूं। मैं पिता को संसार के सिंहासन पर बैठे और स्वर्गदूतों और महादूतों के बीच देखता हूं। वह अपने पैरों की चौकी की धूल में अपने पवित्र बालक को औंधे मुंह गिरे देखता और उसकी पुकार को सुनता। मैं महान पिता की गोद को ऊपर उठते और नीचे होते देखता हूं। मैं उसकी बड़ी ठोड़ी को कांपते हुए और गाल पर आंसू गिरते हुए देखता हूं। पिता निश्चित रूप से उस कटोरे को टाल देगा! वह फिर से ध्यान करके देखता है कि क्रुद्ध और मूर्ख भीड़ किसी भूखे जानवर की तरह जो अपने शिकार का पीछा कर रही है, पहाड़ी के ऊपर चढ़ रही है। व्यथा की वह पुकार फिर से स्वर्ग भेद डालती है और स्वर्गदूत रोने लगते हैं। ज़्या पिता अब पुत्र को बचाएगा?
>
> पिता फिर से देखता है और एक और दृश्य उसके सामने आता है। वह नीचे युगों की ओर ध्यान देता और लाखों-करोड़ों परिश्रम करने वालों को देखता है, जो पाप के अपने बोझ के नीचे जीवन के मंच के पार भौंचज़्के होते हैं। वह उनसे करुणा की पुकार को सुनता है। वह उन्हें टूटे और लहूलुहान दिलों के साथ रौशनी के लिए तड़पते, खुली कब्र के पास खड़े देखता है। उसने रोने से सूजी अपनी आंखों से पाप से दूषित मेरी और आपकी आत्माओं को देखा। उसने हम सब को सनातन कष्ट के किनारे की ओर जाते देखा और हम से प्रेम किया, उसका नाम धन्य है; उसने हम से इतना प्रेम किया कि हमें छुड़ा लिया। मैं उसे पृथ्वी पर यह संदेश देकर एक दूत को भेजते देखता हूं:
>
> ''मेरे पुत्र, यह असज़्भव नहीं है। यदि तू यह कटोरा नहीं पीता तो पृथ्वी के मेरे बेचारे सब बच्चे सदा के लिए नष्ट हो जाएंगे।'' फिर स्वर्गदूत ने उसकी सेवा की, उसे सामर्थ दी और उसका डर निकाला। ''उस डर में उसकी सुनी गई'' ([इब्रानियों]5:7-9)।[10]

जब इस पृथ्वी की समस्याएं आपको परेशान करती हैं, तो ज़्या आपको कभी शक हुआ है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है? अपनी आंखें अपनी समस्याओं से हटाएं और उन्हें क्रूस पर लगाएं। कलवरी पर क्रूस मसीह के कष्ट को देखें। फिर इस सच्चाई पर विचार करें कि परमेश्वर ने आपसे इतना प्रेम किया कि उसने अपने पुत्र को मना कर दिया ताकि वह आपको हां कर सके। क्रूस संदेह के लिए कोई जगह नहीं रहने देता कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है!

परमेश्वर ज़्या करेगा?

अब रोमियों 8:32 को पूरा देखें: ''जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया: वह उसके साथ[11] हमें और सब कुछ ज़्योंकर न देगा?'' नियम आसान है कि जो बड़ा देता है, निश्चय ही वह छोटा भी देगा। यदि किसी ने आपको सौ डॉलर दिए हैं, तो सज़्भवतया वह आपको पच्चीस सैंट देने से इनकार नहीं करेगा, यदि सचमुच आपको चाहिए। परमेश्वर ने हमें बड़ा दान अर्थात अपना पुत्र दे दिया। सो वह हमें छोटे दान देने से ज़्यों हिचकिचाएगा नहीं।

इस आयत में ''सब कुछ'' का अर्थ वह सब कुछ नहीं है, जिसकी हम *इच्छा* कर सकते हैं।

(आम तौर पर जिसकी हम इच्छा करते हैं वह हमारे लिए अच्छा नहीं होता।) इसके बजाय यह हमारी सचमुच की आवश्यकताओं को कहा गया है। पौलुस ने फिलिप्पे के लोगों को बताया कि "परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुज़्हारी एक घटी को पूरा करेगा" (फिलिप्पियों 4:19), "इसलिए पहिले तुम परमेश्वर राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुज़्हें मिल जाएंगी" (मज़ी 6:33)। सबसे बढ़कर इसमें आत्मिक आवश्यकताएं हैं। यानी वे आवश्यकताएं जिनकी हमें उसके लिए जो हमें बनना चाहिए और जो हमें करना चाहिए, आवश्यकता होती है। उन चीज़ों की आवश्यकता हमें अपने जीवनों में परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए होती है।

"हम पर कौन आरोप लगा सकता है?" (8:33, 34क)

यह हमें उस दूसरे प्रश्न पर ले आता है, जिसे मैं दिखाना चाहता हूं: "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा?" (आयत 33क)। "चुने हुओं" का अनुवाद *eklektos* (*ek* ["बाहर"] के साथ *lego* ["कहना"]) से किया गया है, जिसका अर्थ है "चुने हुए लोग।"[12] "चुने हुओं" उन्हें कहा गया है जिन्हें परमेश्वर पहले से जानता था, पहले से ठहराया, बुलाया और धर्मी ठहराया (आयतें 29, 30)। SEB में "परमेश्वर के चुने हुए लोग" है।

"दोष लगाएगा" *enklema* (*en* ["में"] और *kaleo* ["बुलाना"]) से लिया गया है। इसका अर्थ किसी के ऊपर आरोप लगाना या दोष लगाना है।[13] पौलुस ने पत्र में इस्तेमाल किए जाने वाले अदालत के रूपक को फिर से यहां लगाया। इस भाग में आयत 34 के पहले भाग के प्रश्न "फिर कौन है, जो दण्ड की आज्ञा देगा?" पर ज़ोर दिया गया है। "दण्ड की आज्ञा" (*katakrino*) *kata* के साथ मज़बूत करके *krino* ("न्याय करना") से लिया गया है।

यदि हमें आयत 33 के आरज़्भ वाला प्रश्न अलग करना होता तो हम अपने ऊपर आरोप लगाने वाली कई चीज़ों की सूची बना सकते थे। हमें अच्छी तरह जानने वाले जानते हैं कि हम सिद्ध नहीं हैं, और जो हमें पसंद नहीं करते, वे हमारी गलतियां निकालने को उत्सुक रहते हैं। हमारी सूची में हमारे अपने मन (देखें 1 यूहन्ना 3:20, 21) और हमारे अपने विवेक (देखें रोमियों 2:15) हो सकते हैं। शैतान का उल्लेख किए बिना यह सूची अधूरी होगी। शैतान को "हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला, जो रात-दिन हमारे परमेश्वर के सामने उस पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया" (प्रकाशितवाज़्य 12:10; देखें जकर्याह 3:1)।

परमेश्वर के विषय में ज़्या?

परन्तु पौलुस "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा?" प्रश्न कहकर रुक नहीं गया। इसके बाद उसने एक और प्रश्न पूछा: " परमेश्वर वह है, जो उनको धर्मी ठहराने वाला है; फिर कौन है, जो दण्ड की आज्ञा देता है?" (8:33, 34क)। यदि परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया है, हमारे पाप क्षमा किए हैं और हमारे साथ ऐसे व्यवहार कर रहा है "जैसे" हमने कभी पाप किया ही न हो, तो उन पुराने पापों को सामने लाकर कौन हमारे ऊपर दोष लगा सकता है? आपको "एक ही उज़र" याद है? फिर से इसका सांकेतिक उज़र है "**कोई नहीं!**"

यीशु का ज़्या ?

यह पूछने के बाद कि "कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा ?" पौलुस ने कहा, "मसीह वह है जो मर गया बरन मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है" (आयत 34)। विद्वानों को 33 और 34 आयतों में पता नहीं चलता कि कहां विरामचिह्न लगाना है ज़्योंकि "नये नियम के प्राचीन यूनानी हस्तलेखों में कोई विरामचिह्न नहीं है।"[14] विभिन्न अनुवादों को देखें तो आपको अलग-अलग ढंग मिल जाएंगे। आयत 33 और 34 के अलग-अलग भागों का अन्त प्रश्नों, वाज़्यों और यहां तक कि इनकारों के रूप में होता है।

आयत 34 में विरामचिह्न जैसे भी लगें, परन्तु मुज़्य बात वही रहती है। एकमात्र व्यज़्ति जिसे हमें दण्ड देने की आज्ञा है, वह यीशु मसीह है, जो एक दिन सारी मनुष्यजाति का न्याय करेगा (देखें प्रेरितों 17:31)। जिम मैज़्गुइगन ने लिखा है, "जब कोई ऐसे दिखाए जैसे वह हर न्याय का सज़्प्रभु है, तो उसके हाथ, पांव और पसली को चैक कर लो। यदि वह घायल नहीं है, तो उसे नज़रअंदाज करो!"[15] यीशु एक दिन उन लोगों को दण्ड देगा, जो उसे ठुकराते हैं (देखें मज़ी 7:21-23; 25:31, 32, 41, 46; 2 कुरिन्थियों 5:10), परन्तु उसने भरपूर प्रमाण दिया है कि वह विश्वासयोग्य लोगों को दण्ड *नहीं* देगा। देखें कि रोमियों 8:34 के अनुसार यीशु ने ज़्या किया है और ज़्या कर रहा है:

- वह हमारे पापों का दोष अपने ऊपर लेगा, हमारे लिए "मरा" (देखें 1 कुरिन्थियों 15:3)।
- वह प्रमाण के रूप में कि परमेश्वर ने उसे और उसके बलिदान को ग्रहण कर लिया (देखें रोमियों 1:4) और हमारे जी उठने की गारंटी के रूप में (देखें 1 कुरिन्थियों 15:20) "जी उठा।"
- वह परमेश्वर के पास ऊपर उठाया गया और अब अधिकार की स्थिति में (देखें मज़ी 28:18) "परमेश्वर के दाहिने हाथ" बैठा है (देखें भजन संहिता 110:1; प्रेरितों 2:33, 34)।
- फिर हमारी चर्चा की मुज़्य बात कि वह "हमारे लिए निवेदन करता है" आती है (देखें इब्रानियों 4:14-16; 7:25)। हमने 8:26 के अपने अध्ययन में "विनती" शज़्द पर बात की थी, जिसमें हमने देखा था कि यह किसी दूसरे की ओर से आग्रह करने के लिए कहा गया है। NEB में 8:34 इस प्रकार है: "मसीह ... परमेश्वर के दाहिने हाथ है, और ... हमारी सिफ़ारिश करता है।"

पौलुस द्वारा अदालत की भाषा का इस्तेमाल ध्यान में रखें। मैं अपने मन में शैतान को डेविड रोपर के कई पाप और कमियों की सूची दिखाते हुए, परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़ा देखने की कल्पना करता हूं। फिर मैं यीशु को देखता हूं। वह मेरी ओर आता है और अपना हाथ मेरे कंधे पर रखता है। वह पिता से कहता है, "यह मेरा भाई है। मैं इसके लिए मरा। मैंने इसके पापों का दाम चुकाया और अब वे मेरे लहू से साफ़ हो चुके हैं। इसे धर्मी ठहराया गया है और 'दोषी नहीं' घोषित किया गया है।" मैं शैतान को ढीला सा होकर, सिर झुकाए, हार कर बाहर जाते देखने की

कल्पना करता हूं ज़्योंकि यीशु मेरे लिए निवेदन करने को तैयार था।

यदि हम पर किसी अपराध का आरोप लगे और हमें अदालत में जाना पड़े, तो हम अपने बचाव के लिए बढ़िया से बढ़िया वकील करेंगे, परन्तु हम में से अधिकतर लोगों के पास ऐसा वकील करने के लिए पैसे नहीं होते। हम इस उम्मीद से कि हमारी जेब के अनुसार हमें निर्दोष साबित करने के योग्य वकील मिल जाएगा, अदालत में जाते हैं, परन्तु निर्णय पर किसी की कोई गारंटी नहीं है। (यदि आपके साथ ऐसा हुआ हो तो आपको मालूम होगा कि यह कितना डरावना हो सकता है।) यह अहसास करना कितना अद्भुत है कि आत्मिक स्तर पर संसार में हमारा बेहतरीन वकील अर्थात यीशु मसीह है, जो हमारे लिए विनती करता है! इसके अलावा वह "नि:शुल्क" यह काम करता है, केवल इसलिए कि वह हम से प्रेम करता है! हम जानते हैं कि वह सफलतापूर्वक हमारी सफ़ाई *देगा*! यीशु के कारण इस प्रश्न का कि "हमें कौन दोषी ठहरा सकता है?" उज़र है "**कोई नहीं!**"

"कौन हमें अलग कर सकता है?" (8:35-37)

यह हमें तीसरे प्रश्न पर ले आता है, जिस पर मैं ज़ोर देना चाहता हूं: "कौन[16] हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?" (आयत 35क)। संदर्भ में, "मसीह का प्रेम," हमारे लिए मसीह के प्रेम को कहा गया है।

प्रश्न पूछने के बाद पौलुस ने अपने समय के लिए मसीही लोगों में पाई जाने वाली समस्याएं लिखीं: "क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? जैसा लिखा है, कि तेरे लिए हम दिनभर घात किए जाते हैं; हम वध होने वाली भेड़ों की नाईं गिने गए हैं" (आयतें 35ख, 36)। इन आयतों की चर्चा हम 8:35-39 पर पाठ "पवित्र शास्त्र का मैटरहॉर्न" में करेंगे। यहां मैं केवल इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि जब हमारे जीवन में कोई परेशानी आती है तो इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर हमें छोड़ दे। इस तरह से महसूस करना आसान है, है न? समस्याएं बढ़ती जाती हैं, परेशानियां हमें घेर लेती हैं, और हम चकित होते हैं कि क्या प्रभु अब भी हम से प्रेम करता है। एक अर्थ में पौलुस का उज़र है, "हां, वह करता है!" आयत 37 पर ध्यान दें: "परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से *प्रेम किया* है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।"

फ्रिज़ राइडनर ने लिखा है, "बाइबल कष्ट से बचाव की प्रतिज्ञा नहीं करती। यदि यह करती तो दुर्घटनाओं, परेशानियों, हृदयघातों, कैंसर आदि से बचने के लिए लोग मसीह बन जाते।"[17] (अन्य शब्दों में लोग गलत कारणों से मसीही बनने की इच्छा करते।) बाइबल जो प्रतिज्ञा करती है, वह यह है कि किसी भी हाल में परमेश्वर हम से प्रेम करता रहेगा और यह कि अन्त में परमेश्वर सब वस्तुओं को मिलाकर हमारी भलाई करवाएगा (आयत 28)। क्षेत्र के टेलीविज़न स्टेशनों ने जहां मैं रहता हूं एक जवान, गर्भवती पत्नी की दुखद कहानी बताई गई, जिसकी दुर्घटना में मृत्यु हो गई। उसके बच्चे को उसके शरीर में से काटना पड़ा। वह प्रचारक जिसने उस महिला का निकाह और जनाज़ा दोनों करवाए, ने टीवी पर साक्षात्कार दिया। समाचार रिपोर्टर ने पूछा, "हम इसका कोई भी अर्थ कैसे निकाल सकते हैं?" प्रचारक ने उज़र दिया, "कहानी यहीं खत्म नहीं होती।"[18] परमेश्वर के विश्वासयोग्य बालक के लिए, त्रासदी कभी भी "कहानी का अन्त"

नहीं है। कहानी का अंत यह है कि चाहे जो भी हो जाए, परमेश्वर हम से प्रेम करता है।

इस कारण हमें तीसरा प्रश्न कि "कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?" मिलता है और हमारे पास वही सांकेतिक उज़र है: "कोई नहीं!" इसमें हम जोड़ सकते हैं, "**और कुछ नहीं!**"

सारांश

तीन मुज़्य प्रश्न दिए गए हैं: "कौन हम को अलग कर सकता है?"; "कौन है जो दोष लगा सकता है?"; "कौन हमें अलग कर सकता है?" तीनों प्रश्नों का एक ही सही उज़र है: "**कोई नहीं!**" यदि आप अभी परमेश्वर के बालक नहीं हैं, तो ज़्या यह आपको भरोसा करने वाली आज्ञाकारिता के साथ उसके पास आने के लिए विवश नहीं करती (इब्रानियों 11:6; गलातियों 3:26, 27)। ताकि आप उसके प्रेम के दायरे में आ सकें?

यदि यह बात आपको प्रेरित नहीं करती, तो एक अन्तिम प्रश्न पर विचार करें, जिसका उज़र वही है: *मसीह और उसके मार्ग को स्वीकार किए बिना कौन बचाया जा सकता है?* उज़र फिर से वही है "**कोई नहीं!**" यदि आपको प्रभु के पास आने की आवश्यकता है तो मेरा आपसे निवेदन है कि अभी आ जाएं।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट

इस पाठ का एक और शीर्षक "विजय गान" या "अपने लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम" हो सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीज़्स टुडे सीरीज़ (डाउनर ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 246. [2]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पज़्लिशिंग हाउस, 2000), 281. [3]कई लेखकों का मानना है कि पौलुस के मन में यहां पूरा पत्र था; कुछ लेखक, अध्याय 5 से यहां तक और अन्ततः अध्याय 8 से यहां तक मानते हैं। [4]पूरे धर्मशास्त्र में "हम" विश्वासी मसीही लोगों के लिए है। [5]एक अर्थ में मसीह सबके लिए मरा; परन्तु एक और अर्थ में, वह केवल उन्हीं के लिए मरा जो उसकी मृत्यु के लाभों को स्वीकार करते हैं। बाद वाला अर्थ यहां विचाराधीन है। [6]सप्तति, या LXX, पुराने नियम के यूनानी अनुवाद को कहा जाता है। [7]रोमियों 8:32 में "*निज* विशेष सज़्बन्ध को दर्शाता है," जो "मसीह के पुत्र होने के रूप में हमारे पुत्र होने से अलग करता है" (लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988], 335, एन. 149)। [8]ओज़्टेवियस विनस्लो, *नो कंडेमनेशन इन क्राइस्ट जीज़स* (पृष्ठ नहीं, 1857), 324; स्टॉट, 255 में उद्धृत। [9]"मानवीकरण" परमेश्वर के इस प्रकार से बात करने से जुड़ा है, जैसे उसमें मानवीय गुण हों। बाइबल आमतौर पर परमेश्वर के "चेहरे," "आंखें," और "हाथों" की बात करते हुए ऐसी सहयोगात्मक भाषा का इस्तेमाल करती है। [10]जी. सी. ब्रेवर, *क्राइस्ट क्रूसीफ़ाइड: ए बुक ऑफ़ सरमन्स* (पृष्ठ नहीं, 1928; रिप्रिंट, नैशविल्ले: बी. सी. गुडपेस्चर, 1952), 53.

[11]परमेश्वर हमें अलग नहीं करता और हम से अलग और पुत्र से अलग नहीं होता। सभी आशिषें दोनों से मिलती हैं। [12]डज़्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कज़्पलीट एज़्सपोज़िस्टरी*

डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 196. [13] *दि एनेलिटकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 113. [14]मू, 282. [15]जिम मैज़्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इनटू द बाइबल सीरीज़ (लज़्बॉक, टैज़्सस: मोनटैज़्स पब्लिशिंग कं., 1982), 266. मैज़्गुइगन ने लिखा कि यह रोमियों 14 में पौलुस द्वारा बताई मुज्य बात है। [16]''कौन'' का अनुवाद प्रश्नवाचक सर्वनाम *tis* अर्थात इस प्रस्तुति में इस्तेमाल किए गए अन्य दो प्रश्नों वाला शज़्द ही है। सामान्यतया ''कौन'' लोगों के लिए इस्तेमाल होता है, वस्तुओं के लिए नहीं; परन्तु पौलुस ने प्रश्न के बाद *लोगों* की नहीं, बल्कि *वस्तुओं* की सूची दी। यह सज़्भव है कि *tis* का अनुवाद ''कौन'' के बजाय *ज़्या* होना चाहिए। यह भी सज़्भव है कि पौलसु यह संकेत दे रहा था कि उन बहुत सी बातों में जिनका उसने नाम लिया, का कारण लोग *ही हैं*। [17]रिटज़ रिडेनर, सं., *हाऊ टू बी ए क्रिश्चियन विदाउट बीइंग रीलिजियस* (गलेनडेल, कैलिफोर्निया: रीगल बुज़्स, जी/एल पब्लिकेशंस, 1967), 74. [18]ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओज़्लाहोमा, 26 दिसंबर 2004 को दी गई एक बाइबल ज़्लास में मेल सटिनेट द्वारा यह उदाहरण इस्तेमाल किया गया।